वैदिक साहित्य में शिवोपासना व रूद्राक्ष

*डॉ. राजेश कुमार

वेद में तीन काण्ड प्रसिद्ध हैं – कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड। एक लाख मंत्रों में अस्सी हजार मंत्र कर्मकाण्ड के, सोलह हजार मंत्र उपासना काण्ड के और चार हजार मंत्र ज्ञानकाण्ड के हैं।

उपासना के सोलह हजार मंत्रों की उपासना की विध में वेद में सूत्र रूप से और कहीं–कहीं विस्तृत रूप से भी वर्णित है। उन्हीं सूत्रों की व्याख्या पुराण एवं दर्शनों में विस्तृत रूप से वर्णित है। इसी संदर्भ में शिवोपासना का भी वर्णन है। शिवोपासना का मूल शैव सिद्धान्त (पाशुपतदर्शन) है।

शिवोपासना की दार्शनिकता :

'दृशिर् प्रक्षणे' धातु से दर्शन की शब्द की निष्पत्ति होती है। प्रेक्षण अर्थात् देखना **'दृश्यते अनेक इति दर्शनम्'** पदार्थों के यथार्थ ज्ञान के साधना नाम दर्शन है, उन साधनों से उस परमतत्व का ज्ञान होने में ही दर्शन का तात्पर्य है।

भूतभावन आशुतोष भगवान् शंकर के स्वरूप को जानने में पाशुपद दर्शन में जिन पदार्थों का वर्णन किया गया है, उनका निरूपण संक्षेप में इस प्रकार है – 1.कार्य, 2.कारण, 3.योग, 4.विधि और 5.दुःखान्त। इहन पाँच पदार्थों का वर्णन ब्रह्म सूत्र के द्वितीय अध्याय के द्वितीय पाद के सैंतीसवें सूत्र **'पत्युरसामंजस्यात्'** में भी भाष्कार तथा टीकाकारों ने उल्लेख किया है। दर्शनकार के अनुसार इन्हीं पाँच पदार्थों का बोध कर जीव के पशुपाश का विमोचन होता है। अर्थात् अज्ञानी जीव पशु है, कर्मादि बन्धन पाश है, ये ही बन्धन जन्म–मरण हेतु है। इस जन्म–मरण के चक्र से मुक्त होन के लिए ही शैव दर्शन का विधान किया गया है। इसी दार्शनिक शैली में शिवोपासना का वर्णन मिलता हे।

श्रावण में रुद्राक्ष धारण शिवोपासना का मुख्य अंग है, इस कारण रुद्राक्ष का विशिष्ट महत्त्व बताया गया है।

रुद्राक्ष की उत्पत्ति :

'रुद्राक्ष अक्षि रुद्राक्षः, अक्ष्युलक्षितम् अश्रु, तज्जयः वृक्षः' अर्थात् शंकर जी के अश्रुओं से उत्पन्न हुआ वृक्ष रुद्राक्ष वृक्ष हुआ। श्रीमद्देवीभागवत में इस संदर्भ में एक कथा भी उपलब्ध है – एक बार आशुतोष भगवान् शंकर ने देवताओं एवं मनुष्यों की हित की भावन से त्रिपुरासुर का वध करना चाहा और एक सहस्र वर्षों तक तपस्या की तथा अधोरास्र का चिन्तन किया, भगवान् की आँखों से अश्रुविन्दु गिरे, उन्हीं अश्रुओं से रुद्राक्ष उत्पन्न हुआ जैसे मथुरा, अयोध्या, लंका, मलय, सह्याद्रि और काशी।

रुद्राक्ष के वर्ण और धारणा में अधिकार :

रुद्राक्ष चार वर्ण का होता है – श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण। इसी प्रकार वर्ण–भेद से रुद्राक्ष धारण करने की विधि है – ब्राह्मण को श्वेत वर्ण का, क्षत्रिय को रक्त वर्ण का, वैश्य को पीत वर्ण का और शूद्र को कृष्ण वर्ण

का रुद्राक्ष धारण करने की विधि है।

सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां
शिवज्ञया धार्याः सदैव रुद्राक्षाः।
(शिव पु., विश्वे. 25/47)

सभी आश्रमों एवं वर्णों तथा स्त्री और शूद्रों को सदैव रुद्राक्ष धारण करना चाहिए, यह शिव जी की आज्ञा है।

रुद्राक्ष के मुख और धारण–विधि :

शास्त्रों में रुद्राक्ष के एक मुख से चौदह मुख तक का वर्णन प्रशस्त है। रुद्राक्ष दो जाति के होते हैं। रुद्राक्ष तथा भद्राक्ष – **'रुद्राक्षाणां तु भद्राक्षः स्यान्महुलम्'** (दे.भा. 11/7/6)। रुद्राक्ष के मध्य में भद्राक्ष का धारण करना भी महान् फलदायक होता है।

रुद्राक्ष में स्वयं छिद्र हो जाता है – **'स्वयमेव कृतं द्वारं रुद्राक्षंस्यादिहोत्तमम् वत्तु पौरुषलयेन कृतं तन्मध्यमं भवेत।'** (रुद्रा. जाबालो. 12–13)। जिस रुद्राक्ष में स्वयं छिद्र हो जाता है, वह उत्तम होता है, पुरुष–प्रयत्न से किया गया छिद्र मध्यम कोटि का माना गया है।

एकमुखी रुद्राक्ष विशिष्ट महत्त्व का वर्णन इस प्रकार किया गया है – **'एकवक्त्रं तु रुद्राक्षं परतत्त्वस्वरूपकम्'** एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिव तथा परतत्त्व (परब्रह्म) – स्वरूप है ओर परतत्त्व–प्रकाशक भी है और **'ब्रह्महत्यां व्यपोहति'** (दे. भा. 11/4) ब्रह्महत्या का नाश करने वाला है, इसको धारण करने का मंत्र यह है –

'ऊँ ह्रीं नमः।'
'द्विवक्त्रं तु मुनिश्रेष्ठ चार्धनारीश्वरात्मकम्'

द्विमुखी रुद्राक्ष साक्षात् अर्धनारीश्वर है, इसको धारण करने से शिव–पार्वती प्रसन्न हो जाते हैं। **'ऊँ नमः'** इस मंत्र से द्विमुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

'त्रिमुखं चैव रुद्राक्षामग्नित्रयस्वरूपकम्'

त्रिमुखी रुद्राक्ष तीनों अग्नियों (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि) का स्वरूप है। तीन मुखवाले रुद्राक्ष को धारण करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। **'ऊँ क्लीं नमः'** यह त्रिमुखी रुद्राक्ष धारण करने का मंत्र है।

'चतुर्मुखं तु रुद्राक्षं चतुवकास्वरूपकम्।'

चतुर्मुखी रुद्राक्ष साक्षात् ब्रह्माजी का स्वरूप है। इस रुद्राक्ष–धारण से संतान की प्राप्ति होती है। **'ऊँ ह्रीं नमः'** यह इसके धारण करने का मंत्र है।

'पंचवक्त्रं तु रुद्राक्षं पंचब्रह्मस्वरूपकम्'

पंचमुखी रुद्राक्ष पंचदेवों (विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और देवी) का स्वरूप है। इसके धारण करने से नरहत्या के पाप से प्राणी मुक्त हो जाता है। पंचमुखी को **'ऊँ ह्रीं नमः'** इस मंत्र से धारण करना चाहिए।

'षड्वक्त्रमपि रुद्राक्षं कार्तिकेयाधिदैवतम्।'

षण्मुखी रुद्राक्ष साक्षात् कार्तिकेय हैं। इसके धारण करने से श्री एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **'ऊँ ह्रीं**

नमः' इस मंत्र से इसे धारण करना चाहिए।

'सप्तवक्त्रो महाभागो ह्यनंगो नाम नामतः'

सप्तमुखी रुद्राक्ष अनंग नामवाला है। इसके धारण करने से स्वणस्तेयी स्वर्ण चोरी के पाप से मुक्त हो जाता है। **'ऊँ हु नमः'** यह धारण करने का मंत्र है।

'अष्टवक्त्रो महादेवः साक्षी देवो विनायकः'

अष्टमुखी रुद्राक्ष साक्षात् साक्षी विनायक है और इसके धारण करने से पंच पातकों का विनाश होता है। **'ऊँ हुं नमः'** इस मंत्र से धारण करने से परम पद की प्राप्ति होती है

'नववक्त्रं तु रुद्राक्षं नवशक्त्यधिदैवतम्।
तस्य धारणमात्रेण प्रीयन्ते नव शक्तयः।।

नवमुखी रुद्राक्ष नव दुर्गा का प्रतीक है। उसको **'ऊँ ह्रीं हुं नमः'** इस मंत्र से बाएँ भुजदण्ड पर धारण करने से नव शक्तियाँ प्रसन्न हो जाती हैं।

'दशवक्त्रस्तु देवेशः साक्षद्देवो जनार्दनः'

दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् भगवान जनार्दन है। **'ऊँ ह्रीं नमः'** इस मंत्र से धारण करन पर साधक की पूर्णायु होती है और वह शांति प्राप्त करता है।

'एकादशमुखं त्वक्षं रुद्रैकादशदैवतम्'

(रुद्राक्षजाबाल.)

एकादशमुखो वस्तु रुद्राक्षः परमेश्वरि।
स रुद्रो धारणात् तस्य सर्वत्र विजयी भवेत्।।

(शि. पु. वि. सं. 25/75)

एकादशी मुखी रुद्राक्ष **'ऊँ ह्रीं नमः'** इस मंत्र से धारण करना चाहिए। धारक साक्षात् रुद्र रूप होकर सर्वत्र विजयी होता है।

रुद्राक्षं द्वादशमुखं महाविष्णुस्वरूपकम्।
द्वादशादित्यरूपं च बिभर्त्येव हि तत्परम।।

(रुद्राक्षजाबाल. 14)

द्वादशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् महाविष्णु का स्वरूप है। **'ऊँ क्रौं क्षैं रौं नमः'** इस मंत्र से धारण करने से धारक साक्षात् विष्णु को ही धारण करता है। इसे कान में धारण करें। इससे अश्वमेधदि का फल प्राप्त होता है।

त्रयोदशमुखं त्वंक्षं कामदं सिद्धिदं शुभम्।
तस्य धाणमात्रेण कामदेवः प्रसीदति।।

(रुद्राक्षजाबाल. 15)

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष धारण करने से सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति पूर्वक कामदेव प्रसन्न हो जाते हैं। **'ऊँ ह्रीं**

नमः' इस मंत्र से इसे धारण करना चाहिए।

चतुर्दशमुखं त्वक्षं रुद्रनेत्रमसद्भवम्।
सर्वव्याधिहरं चैव सर्वदारोग्यमाप्नुयात।।

(रुद्राक्षाजाबाल. 16)

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष रुद्र की अक्षि से उत्पन्न हुआ, वह भगवान् का नेत्र–स्वरूप है। **'ॐ नमः'** इस मंत्र से धारण करने पर रुद्राक्ष सभी व्याधियों को हर लेता है।

रुद्राक्ष धारण करने में वर्जित पदार्थ :

रुद्राक्ष धारण करने वालों को निम्नलिखित पदार्थों का वर्जन (त्याग) करना चाहिए–

मद्यं मांसं च लसुनं पलाण्डुं शिग्रुमेव च।
श्लेष्मातकं विड्वराहमभक्ष्यं वर्जयेन्नरः।।

(रुद्राक्षजाबाल. 17)

रुद्राक्ष धारण करने पर मद्य, मांस, लहसुन, प्याज, सहजन, और विड्वराह (ग्राम्यसूकर) इन पदार्थों का परित्याग करना चाहिए।

रुद्राक्ष को मंत्रपूर्वक ही धारण करें :

विना मन्त्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः।
स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश।।

बिना मंत्रोच्चारण के रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य घोर नरक में तब तक रहता है, जब तक चौदह इन्द्रों का राज्य रहता है।

रुद्राक्ष को शुभ मुहूर्त्त में धारण करें :

ग्रहणे विपुवे चैवमयने संक्रमेअपि वा।
दर्शेषु पूर्णमासे च पूर्णेषु दिवसेषु च।
रुद्राक्षाधारणात् सद्यः सर्वपापैर्विमुच्यते।।

ग्रहण में, विषुवसंक्रांति (मेषार्क तथा तुलार्क) के दिन कर्क–संक्रांति और मकर–संक्रांति, अमावस्या, पूर्णिमा एवं पूर्णा तिथि को रुद्राक्ष धारण करने से सद्यः सम्पूर्ण पापों से निवृत्ति हो जाती है।

***सह–आचार्य**
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, उनियारा (टोंक)

संदर्भ सूची

1. **ऋग वेद**
2. **साम वेद**
3. **यजुर्वेद**
4. **अथर्व वेद**